INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

भगवानदास मोरवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(Personality and Creativity of Bhagwandas Morwal)

सुकेश कुमारी
शोधार्थी (नेट)
हिन्दी विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी (सम विश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/06.2021-24628882/IRJHIS2106025

शोध सारांश:

किसी भी लेखक का व्यक्तित्व ही उसे उसकी मंजिल तक पहुँचाता है। एक लेखक का व्यक्तित्व उसके जीवन में नहीं अपितु उसकी रचनाओं में अधिक झलकता है और एक लेखक के गुणों और स्वभाव को दर्शाता है।
जीवन की सम्पूर्णता के कवि कथाकार और उपन्यासकार है। वह एक ऐसे लेखक है। जो जीवन से कम किसी भी चीज के लिए राजी हो ही नहीं सकते। इस मामले में कोई वाद, कोई एक विचार या कोई सामाजिक-राजनीतिक बाड़ा उनके लिए छोटा बहुत, बहुत छोटा साबित होगा। बहुमुखी प्रतिभाके धनी, मोरवाल का व्यक्तित्व हो या रचनाएँ, उनकी विशेषता ही यही है कि उनमें बनावट कम से कम है, सहज सादगी ही उसका प्राण है। लेखक के ये गुण ही उसे अन्य लोगों से अलग करते है। किसी भी कथाकार की ताकत इस बात में निहित होती है कि उसकी कथा संरचना कैसी है। वह लेखक दृश्य चित्रण में सफल है या नहीं। यदि कोई लेखक पूर्ण रूप से इन सभी गुणों में परिपक्व नहीं है तो वह लेखक श्रेणी में रखने योग्य हो भी नहीं सकता। इसलिए लेखक को एक पूर्ण लेखक बनने के लिए सभी अनुभवों का ज्ञान होना तथा उन्हें शब्दों के माध्यम से पाठकों तक उसे पहुँचाने की कला में निपुण होना चाहिए लेखक का पाठक से तथा पाठक का लेखक से तादात्मय होना चाहिए। रचना को पढते ही ऐसा प्रतीत होना चाहिए कि ये स्मृतियाँ मेरी ही है जब लेखक इन कार्यो में निपुण हो जाए तो ही वह लेखक बन पाता है। इसी संदर्भ में यह आलेख भगवानदास मोरवाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित करता है। और उनके जीवन के पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

सूचक शब्द: भगवानदास मोरवाल, रचनाएं, साहित्य, उपन्यास, कहानी, कविता आदि।

भगवानदास मोरवाल का जीवन परिचय:

मोरवालजी बचपन से ही चुस्त प्रवृत्ति के रहे है। ये पढ़ने में होशियार होने के साथ-साथ काम में भी हाथ बंटाते थे। इन्हें खेलने का भी बहुत शौक था। स्कूल के समय में ही इन्होंने पढ़ाई अपने गाँव से ही प्रारंभ की थी। स्कूल समय में इन्हें जब भी समय मिलता अपने मित्रों के साथ खूब मौज-मस्ती करते थे, इनका क्रिकेट से बड़ा लगाव था पहले ये गेंदबाज बनना चाहते थे, परन्तु कप्तान के कहने पर ये विकेट कीपिंग करने लगे उन दिनों भारतीय क्रिकेट

टीम में फारूक इंजीनियर विकेट कीपर हुआ करते थे, विकेट कीपर के साथ-साथ वे सल्लामी बल्लेबाज की भूमिका भी निभाया करते थे। इस तरह ये इनके आदर्श बने और इनके साथ बल्लेबाजी भी करने लगे। क्रिकेट के साथ-साथ इन्हें फिल्में देखने का भी शौक था। देशभक्ति और राष्ट्रवादी जाबांज सैनिकों के जीवन पर आधारित फिल्में देखने के शौकिन थे। सभी तरह के शौकों के साथ इन्होंने अपनी पढ़ाई को हमेशा जारी रखा। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी पर फिर भी इन्होंने किताबों से अपने लगाव को कम न होने दिया और जैसे भी करके अपनी पढ़ाई जारी रखी। मोरवालजी में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने इसी पैतृक कस्बे तथा यासीन मे व डिग्री कॉलेज नूह से स्नातक किया है। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से एम.ए. (हिन्दी) की उपाधि के साथ-साथ इसी विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया है।

मोरवालजी लेखक के साथ-साथ अच्छे संपादक थे। इसलिए हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकारिता के संपादन में भी उसका नाम रहा है। इनके जीवन के कई प्रेरणा स्रोत बने तथा इनका हिंदी के कथासम्राट से पहला परिचय सातवी कक्षा में हिंदी विषय में लगी एक कहानी बड़े घर की बेटी के रूप में हुआ था, परन्तु असली प्रेरणा इन्हें इनके अध्यापक ओमी मास्टर बने जिन्होंने इन्हें पहली बार संदूक में रखी किताबों से परिचित कराया और तभी से इन्हें किताबों से गहरा लगाव होता चला गया तथा यह लगाव आज तक भी उनके साहित्य के लिए बना हुआ है। भगवान दासजी एक गंभीर और मूर्धन्य कथाकार है। इनके लेखन में समाज. राजनीति और लोक जीवन की कई तरहों की अभिव्यक्ति हुई है। वे कैरियर राइटर नहीं है। इन्होंने अपने लेखक काल में अनेक रचनाएँ लिखी है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोरवालजी का व्यक्तित्व हो या रचनाएँ उनकी विशेषता ही यही है कि उनमें बनावट कम से कम है, सहज सादगी ही उसका प्राण है। जिसके अंतर्गत अपनी संस्कृति, राजनीति धर्म समुदाय आदि पर लिखा है इनके लेखन में मेवात क्षेत्र की ग्रामीण समस्याएँ उभरकर सामने आती है तथा भारतीय संस्कृति में नौटकी अभिनय व लोक परम्परा आदि का चित्रण भी इनके उपन्यासों में मिलता है। ये अपने लेखन कार्य के लिए जो भी विषय उठाते है। उसकी तह तक जाते हुए उसकी पूरी तैयारी करते है। क्योंकि लेखन प्रक्रिया में बहुत सारे तत्त्व महत्त्वपूर्ण होते है। ये अपने लेखन कार्य को पूरी और ईमानदारी से पूरा करते है।

भगवानदास मोरवाल जी कहते हैं कि जीवन तो हमारा बड़ा टेढ़ा-मेढ़ा रहा है मैं तो विशुद्ध रूप से दलितों में आता हूँ, हालांकि लोग हमें दलित नहीं मानते और दलित शब्द की संवैधानिक परिभाषा जिसके तरह आरक्षण प्राप्त होने पर ही व्यक्ति दलित माना जाता है और उसके अनुसार भी दलितों में नहीं आते। दरअसल मेवात हमारे यहाँ कालापानी कहा जाता है। ऐसे में कल्पना की जा सकती है कि जिस क्षेत्र को लोग कालापानी की संज्ञा देते हो वहाँ का जीवन और परिवेश कितना ऊबड़-खाबड़ होगा और लेखन की बात करें तो कभी सोचा ही नहीं था कि हम लेखक बन भी सकते है। हमारी लेखकीय प्रगति हुई है।

भगवानदास मोरवाल जी का जन्म 23 जनवरी, 1960 में हरियाणा के दक्षिण में स्थित काला पानी कहे जाने वाले मेवात (नगीना) में हुआ है। मेवात को काला पानी क्यों कहा जाता है। सभी की तरह भगवानदास की भी इस व्यथा को समझने में असमर्थ से दिखाई देते है और वे अपने संस्मरण में इसका जिक्र करते है कि लंबे समय तक मैं इसकी एकमात्र वजह आर्थिक पिछड़ेपन को मानता रहा। मगर जब मैं पूरे हरियाणा पर नजर डालता हूँ तब पाता हूँ कि इस हरियाणा का अहीरवाल और राजस्थान के रेगिस्तान से सटे बागड इलाके तो मेवात से भी गए गुजरे है। मेरी मान्यता और धारणा के अनुसार केवल मेवात को इसलिए इस संज्ञा से शोभित किया जाता है क्योंकि यह मेव बहुल्य क्षेत्र है। अपर लीघा और निचल्लीघां दो हिस्सों में बंटा काला पानी का यही छोटा-सा जजीरा यानी नगीना ही मेरी पैतृक जन्म स्थली है। इसके पूरब में इस्लामी मदरसा है, तो धुर पश्चिम में दुकान अर्थात् ईदगाह और इससे पहले ग्यारमी में पचपीर। उत्तर में शिवाजी का अस्तल व हिन्दुओं के सवर्णों का श्मशान यानी चीहरां है, तो दक्षिण में दादूखानू की मजार और उससे आगे दलितों का चेहरा है। पूरब में स्थित बड़कली का जिक्र न करना, नगीना के अस्तित्व को नकारने जैसा है। जिस तरह इस देश में हर जाति के पास उसका एक कथित तथाकथित गौरवशाली अतीत, इतिहास लोक विश्वास और उनके जुड़ी अनेक किंवदन्तियाँ है उसी तरह मेरी जाति कुम्हार यानि प्रजापति, प्रजापत, कुमावत, कुमार पंडित, कूट पालक, घटकार, चक्रजीवी, कुंभकार जैसे नामों से जानी जाती है तथा सृष्टि का जिसे आदि कलाकार माना गया है।

मध्यवर्गीय परिवार में जन्में मोरवाल जी को बचपन अभाव में बीता। भगवानदास मोरवाल छोटे से कस्बे नगीना के अत्यन्त पिछड़े मजदूर परिवार में हुआ था, इन्होंने हिन्दी कथा जगत में भी महत्त्वपूर्ण स्थान गनाया है। हिन्दी के पाठक इन्हें मोरवाल जी के नाम से जानते है क्योंकि वे इसी नाम से लिखते रहे। स्वभाव भगवानदास मोरवाल अच्छे लेखक भी है और अच्छे व्यक्ति भी। उनमें सरलता है, सहजता है, उदारता है, बड़प्पन है, सादगी है, नम्रता है, निच्छलता है, विनय है, मधुरभाषा है, अहं का भाव तो जैसे छू भी नहीं गया है।

मोरवाल के व्यक्तित्व की चर्चा उनकी स्पष्टवादिता का उल्लेख किए बिना अधूरी होगी वे उन लेखकों में से नहीं है, जो स्वयं को असाधारण साबित करने के लिए कुछ तथ्यों को छिपा जाते है. वे खुली किताब है इसलिए मोरवाल जी स्पष्ट कहते है कि बचपन में साहित्यिक माहौल नहीं था और न ही साहित्य की कुछ खास समझ थी दिल्ली आने से पूर्व (1982) तक मुझे यह भी मालूम नहीं था कि सारिका जैसी कोई पत्रिका भी हिन्दी में छपती है हाँ, बचपन में नाम छपाने की आकांक्षा से प्रेरित होकर कुछ तुकबंदियाँ अवश्य स्थानीय अखबारों में प्रकाशनार्थ भेजी थी। आज जब साहित्य की दुनिया में असल की नकल करने का खेल पूरे शबाब पर है ऐसी साफगोई दुर्लभ है। उनमें अनुभव सूक्ष्मदृष्टि और कल्पनाशीलता का सामंजस्य है, उनके पास व्यापक अनुभव है। जिसमें उत्तरोत्तर विस्तार होता रहा है, लेकिन उनका मन ग्राम्य जीवन और पिछड़े जन-जीवन में ही अधिक रमता गया है। शहरी चकाचौंध उन्हें अभी तक नहीं लुभा पाई। यही कारण है कि अब तक प्रकाशित उपन्यासों में ग्राम जीवन ही उभरकर आया है। मोरवाल जी को अपनी निजी शैली और निजी तकनीक है व्यंग्यात्मक और नाटकीयता के साथ किस्सागोई का मणिकांचन संयोग उन्हें विशिष्ट बनाता है। यह कहने में संकोच नहीं । होता कि वर्णनशैली की जो खानगी पेमचंद्र अपने अंतिम कथा-साहित्य

में दे पाये थे, यह मोरवाल भी को पहले ही उपन्यास में हासिल है लेखन मोरवाल जी के लिए महज एक शौक नहीं बल्कि तपस्या है। बंद कमरे में बैठकर अवचेतना की कुंठाओं को उटपटांग शैली में लिखते रहने की चालाकी उनसे कोसों दूर है, उनके लेखन में बड़ी मेहनत और एकाग्रता का काम है ये बकायता 'फिल्ड में जाकर तथ्यों की खोज और अध्ययन करते है। प्रामाणिकता और मार्मिकता के लिए एक-एक संवाद को दस-दस बार संशोधित करना भी उन्हें मंजूर है। अपने लेखन के प्रति निर्ममता, लेखन के प्रति ईमानदारी, वैचारिक प्रतिबद्धता एवं स्पष्टता इनके कथा साहित्य में दिखाई देती है। इसी ईमानदारी और प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप वह अपने पहले उपन्यास से ही हिन्दी कथा साहित्य पर छा गये है और दूसरे उपन्यास में भी उनका लेखकीय व्यक्तित्व निखरकर सामने आया है। कमलेश्वर, डॉ० मैनेजर पाण्डेय, नामवरसिंह जैसे माने जाने आलोचकों ने उन्हें सराहा है।

श्री लाल शुक्ल कहते है, "भगवानदास मोरवाल के अपवाद ग्रस्त समाज में भी बड़ी जीवंत दिखाई देती है। इनके उपन्यास मेरे लिए पुनश्चर्या साबित हुई है ग्लोबलाइईजेशन और मल्टीनेशनलस के ज़माने में अस्मिताहीन होते जातीय समाज के उपस्थित करने का काम किया है।"

शिक्षा, नौकरी एवं व्यवसाय:

भगवानदास मोरवाल की शिक्षा का आरभ उनके गाँव नगीना से ही हुआ उनके गाँव में ही एक स्कूल था जिसमें वे पढ़ने के लिए जाया करते थे। वे पढ़ाई की ओर अधिक आकर्षक थे और उनकी पढ़ने लिखने में बहुत रूचि थी इसलिए उन्होंने घर के पुश्तैनी काम-काज में हाथ बटाने के साथ-साथ अपनी पढ़ाई को भी पूरा समय दिया। ये स्वयं बताते है "नगीना के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में यह स्कूली जीवन का आखरी साल था अर्थात् मार्च 1978 में मेरी स्कूली शिक्षा पूरी हो गयी थी।

इसके पश्चात् इन्होंने बी०ए० फर्स्ट ईयर में नूँह के कॉलेज में आर्टस में दाखिला लिया। बी०ए० पूरी करने के बाद इनाने अप्रैल 1984 में राजस्थान विश्वविद्यालय में एम०ए० हिन्दी मे प्रवेश लिया। इससे पहले 1983 में इन्होंने पत्रकारिता में किए जाने वाले डिप्लोमा की वार्षिक परीक्षा जयपुर से दी। 1969 में इन्होंने मेरठ विश्वविद्यालय से पीएच०डी० का रजिस्ट्रेशन भी कर लिया।

मोरवाल जी का लगभग सात वर्षों तक (1981 से 1987) पत्रकारिता के अलावा कुछ पत्र इन्सान थे तथा जीवन में आई कठिनाइयों व समस्याओं का उन्होंने डटकर सामना किया। है साहस की जिन्दगी जीते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहे और अपनी पढ़ाई को जारी रखा। किंत किसी कारणवश इनकी डॉ० कहलाने का सपना पूरा न हुआ ये लिखते है, "इसे मेरा दुर्भाग्य कहिए या विधि का विधान कि मेरी यह सनक या इच्छा कहिए मेरी काहली और लापरवाही के चलते पूरी नहीं हुई। 'डाक्साब' कहलाने की आस धरी की धरी रह गयी।

मोरवाल जी लेखक के साथ-साथ एक अच्छे संपादक भी थे। इसलिए हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकारिता के संपादन में भी उसका नाम रहा है। लेखक अपने आप में एक संगठन होता है और अगर उसमें प्रतिभा है और वह पूरी ईमानदारी और मेहनत से अपने लेखन में जुटा रहे तो दुनिया की कोई ताकत उसकी राह में रोड़े नहीं अड़ा सकती। अपनी मिट्टी से जुड़े हुए होने के कारण मोरवालजी ने भोगे हुए जीवन यथार्थ को बड़ी मोहकता से लेखनबद्ध किया है।

घर के मिट्टी के बर्तन बनाने के काम से लेकर पढाई करने और जब तक ये सरकारी नौकरी पर नियुक्त नहीं हुए तब तक इन्होंने कभी भी मेहनत करने से जी नहीं चुराया। किसी भी व्यवसाय में इनकी साहित्य के प्रति रूझान कम नहीं हुआ। घर हो बाहर रहते हुए, महानगर दिल्ली में अपना व्यवसाय जमाने की जद्दोजहद में भी ये साहित्य के प्रति लीन रहे। स्कूल के समय से ही इन्होंने लिखना आरंभ कर दिया था। जो इनकी पहली कृति है। वो इस प्रकार है. "पता नहीं अवचेतन में किस कवि की पंक्तियाँ छपी हुई होगी या कहिए किसका प्रभाव रहा होगा कि ग्यारवीं में एक कविता लिख मारी, इसका शीर्षक था,

"मेरा स्वपन ।"

जब कभी मैं देखता हूँ, खिलती कलियाँ ये बहारे।
याद आते हैं स्वप्न में, स्वर्ग के सारे नजारे।
पर मेरा है देश विशाल, इसमें है सारे सितारे।
है कही विशाल पर्वत, तो कहीं नदियाँ ये नाले ।
इसमें है ऐसे जवान, गाती दुनिया जिनके गुणगान।
है नही हिम्मत किसी की. जो करे इसका अपमान।।
वीर भगत सिंह लाल बहादुर, ये ये एसे कर्णधार।
आज हमें उनके सपनों को, जल्दी करना है साकार।
इसमें भाषा अलग-अलग है, है पहनावा अलग-अलग।
अपने देश के प्रति उनमें, उठती रहती प्रेम उमंग ।।
कितना विशाल है मेरा देश, देखकर बढ़ता मेरा ध्येय।
मेरी सदा यही कामना, होती रहे सदा विजय ।

साहित्य फलक पर ये अपने चरणों से गुजरे, उनके साहित्य प्रशिक्षण निखार की प्रक्रिया, साहित्यिक गोष्ठियों, वाद-विवादों में से होकर गुजरी। साहित्यिक संस्थाओं में वर्षों तक जाने का और गोष्ठियों में भाग लेने का क्रम चलता रहा। इस प्रकार इनकी लेखकीय प्रतिभा निखरी, कवि व्यक्तित्व उभरा। इसी दौरान ये अनेक लेखकों से मिले और सम्पादकों से मिले। इन्होंने इनके समय में पत्रिकाओं में सम्पादक रहे जैसे योगश चंद्र भार्गव आदि के साथ भी काम किया तथा अनुभव ग्रहण किया। भगवानदास मोरवाल की एक विशेष आदत थी. जब ये दिल्ली काम करते थे तो ये शाम को दिल्ली में लेखकों के तीर्थस्थल कॉफी हाउस जाया करते थे, वहाँ जाकर ये सभी लेखकों को देखा और चुपचाप बैठकर सुना करते थे बाद में धीरे-धीरे उनसे परिचय भी होने लगा। लिखते हुए यह आगे बढ़ने लगे।

समाज कल्याण पत्रिका में प्रस्तुति सहायक पद पर आसीन होने से पूर्व भगवानदास मोरवाल ने मंजुली दर्पण (मासिक) में उपसंपादक के रूप में तथा सारंग' (अनियकालीन) पत्रिका से जुड़े रहे। इन्होंने सात वर्ष (1981- 1987) स्वतंत्र पत्रकारिता की अब तक इनके विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषयों पर 240 से अधिक आलेख रिपोतार्ज, समीक्षात्मक लेख तथा रचनाएँ हिन्दी की सभी लब्ध-प्रतिष्ठित पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित होती

रही है। आप 1987 से 1994 तक केन्द्रिय समाज कल्याण बोर्ड', मानव संशोधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की मासिक पत्रिका 'समाज कल्याण के सम्पादकीय विभाग से सम्बद्ध रहे।

केन्द्रिय समाज कल्याण बोर्ड, मानव संशोधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार में सहायक निर्देशक के पद पर कार्यरत है, मोरवाल जी अपने छोटे से परिवार के साथ पालम गाँव, नई दिल्ली रह रहे है। परिवार में पत्नी श्रीमती सुनिता, पुत्र प्रवेश पुष्प और पुत्री नैया है। प्रवेश पुष्प एम०सी०ए० कर रहे है और नैया, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०फिल्० कर रही है।

पारिवारिक स्थिति:

मोरवाल जी के परिवार में वह दो भाई और एक बहन तथा माता जी (कलबत्ती) इनके पिता जी (मगतू) समेत पांच लोगों का परिवार है। बड़े भाई मनोहरलाल की घर फूक मस्ती के चलते परिवार के सदस्यों का गुजारा करना काफी मुश्किल था, यही कारण है कि बड़े भाई मनोहर मात्र सातवीं कक्षा तक ही पढ़ पाये और छोटे भाई सुभाषचंद्र मैट्रिक तक आर्थिक तंगहाली से जूझते परिवार और पिता का मनमौजी स्वभाव 'कंगाली में आटा गीला कहावत को चरितार्थ करता था। पिता के फक्कडपन स्वभाव और बचपन में ही शादी का होना मोरवाल के जीवन-संघर्ष में वृद्धि का कारण बना. किन्तु वे मानते है कि मेरा अच्छा लेखन इन्हीं संघर्षपूर्ण दिनों के संचित अनुभवों का परिणाम है।

इनकी पत्नी सुमरती जिसने सदैव इनका साथ दिया आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण कभी भी इन्होंने किसी बात की कोई शिकायत नहीं कि और भगवानदास मोरवाल जी का सदैव साथ दिया। जब मोरवाल जी काम की तलाश में दिल्ली चला गया तब इनकी पत्नी ने पूरे परिवार को संभाला तथा बच्चों की देखभाल की और अकेले ही कठिन स्थिति में बच्चों का पालन-पोषण किया। काफी लंबे समय तक ये इनके साथ न रहते हुए कभी गाँव में तथा कभी अपने मायके में ही रही। मोरवाल जी के परिवारवालों ने बड़ी ही होशियारी से सुमरती को इनके साथ दिल्ली भेज दिया। कई बार नाजुक परिस्थितियों होने पर भी समरती ने कभी हार नहीं मानी, अपने परिवार तथा बच्चों के लिए सदैव खड़ी रही और आर्थिक कठिनाई होने पर भी वह अपने परिवार की सभी जिम्मेदारी को निभाया लेखक स्वयं ही इसका जिक्र करते हुए कहते हैं. "दो-दो अबोध बच्चों की माँ द्वारा ऐसी विषम परिस्थितियों में लोहा लेना अपने आप में एक मिसाल है।" जबकि इसके बरअक्स एक स्वार्थी पति और दो बच्चों का 23 वर्षीय बाप अपनी जिम्मेदारियों से पलायन कर ऐसे दुबक कर बैठा हुआ था कि उसे एक पति और एक बाप कहने में शर्म आती है। यह शर्मिन्दगी अपनी जगह है भी सही। मगर मैं चाह कर भी कुछ कर पाने में असमर्थ था।

भगवानदास मोरवाल जी कुम्हार जाति के थे उनका पुश्तैनी काम भी मिट्टी के बतन बनाने का ही था। ये अपनी माँ, पिता के जी-जान से बिना कोई शर्म महसूस किए काम में पूरा सहयोग देने आए है। अहवा चढ़ाने से उतारने तक तथा ईंशन लाना, पके बर्तन को बेचने तक. हर काम में इन्होंने परिवार का साथ दिया। ये पढ़ाई करने के लिए बड़े आतुर रहा करते थे, इसलिए भी ये घर के काम में आलस न करते हुए फटाफट निपटा कर पढने बैठ जाया करते थे। पढाई के साथ- साथ इन्होंने बेझिझक अपने काम को भी पूरा सहयोग दिया। अपने परिवार वालों के प्रति

कुद स्मृतियों ऐसी है जिन्हें इन्होंने अपने संस्मरण पकी जेठ का गुलमोहर के माध्यम से दर्शाया है, वे स्वयं लिखते है, "पिता जी को हम चाचा ही कहते थे, हालाँकि मेवात में चाचा से अधिक काका शब्द प्रचलित है।

पता नहीं हम अपने पिता को काका की जगह चाचा क्यों और कब कहने लगे थे हौं मेरे ताऊ जी जिन्हें हम बाबा कहते थे उनकी इकलौती बेटी फूलबती अपने पिता को काका कहकर बुलाती थी मेरे एक मामा के बच्चे भी अपने पिता को मामा ही कहते थे।

हमारे चाचा जी का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था। कानों में झूलती सोने की मुकियों और दाँतों में चढ़ी सोने की चौंप उनके इन आकर्षण को और भी बढ़ा देती थी बाये हाथ पर उर्दू में गुदे 'मंगतुराम शब्द को देखकर ही मैंने जाना कि उन्हें उर्दू का थोडा-सा अक्षर ज्ञान था। बड़ा ही बेपरवाह किस्म का व्यक्तित्व था वह जीजी (लेखक की माँ) अंकसर उनके बारे में दुःखी मन से कहती थी इस आदमी ने जैसा कमाया वैसा गंवाया था। जिन्दगी में कुछ जोड़ा नहीं। होश संभालने पर मैंने देखा कि जीजी सही कहती थी हाथ में पैसा आते ही चंचल लक्ष्मी छिटकने को आतुर हो जाती। यानि पैसा कभी उनके पास रूका ही नहीं

मोरवाल जी स्वीकार करते है कि मेरी पारिवारिक स्थिति और आस-पड़ोस के माहौल ने मेरे लेखकीय व्यक्तित्व को तैयार करने में अहम भूमिका अदा की तथा परिवार का रहन-सहन, रीति-रिवाजों आदि का प्रभाव बालक स्वभाव तथा व्यक्तित्व पर पड़ता है और बड़े होने पर बालक के चरित्र का निर्माण होता है।

हमारे समाज में लुहार, कुम्हार, नाई, मोची. मनिहार, कुंजडा, बल्कि किसान जैसी जातियों और समुदायों के बीच आपसी लेन-देन की परम्परा आदि काल से चली आ रही। इस लेन-देन में धर्म की आड़े नहीं आया। जब तक प्रेम रहा तब तक, हिन्दू और मुस्लिम हुनरमंद जातियों से आपसी लेन-देन का संबंध भी बना रहा।

कृत्तित्व:

भगवानदास मोरवाल एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। उपन्यास और कहानी के साथ-साथ कविता और अन्य साहित्य लेखन की प्रवृत्तियों में भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। फिर भी उनका नाम उपन्यासकार के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध है। यह एक अच्छे उपन्यासकार माने जाते है।

साहित्य कर्म:

मोरवाल जी की साहित्य यात्रा बचपन में सहज रूप में प्रारंभ हुई। ये बचपन से जहाँ पढ़ता था वहाँ साहित्यिक माहौल नहीं था किन्तु यह अभावग्रस्त कछरांचल उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ। मोरवाल जी ने अपनी भावुकता से उत्पन्न साहित्य अंकुर को सीधे अभावमय जीवन से ही सींचना शुरू किया कछार की प्रवृत्ति से बाढ़ग्रस्त जिदगी के अभावों और पीड़ाओं से, त्यौहारों और पर्वो के उल्लासो के साथ-साथ उनके किशोर मन की भावुकता भी उस देहातांचल के अनुभव के साथ जुड़ी हुई थी। मोरवाल जी के साहित्य में अपने परिवेश तथा देश के अभावग्रस्त लोगों की वेदना, अभिशाप और यातना से जोड़ा। उन अभावों और मस्ती भरे खुले वातावरण से ही उनको मानवीय और साहित्यिक शक्ति मिली. जहाँ वे खड़े होकर साहित्यिक, व्यक्तित्व को उस ठोस जमीन पर खड़ा कर सके। वही से बह साहित्य के लिए जीवन रस प्राप्त करते रहे। भगवानदास मोरवाल प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। उन्होंने

उपन्यास और कहानियों के साथ-साथ अन्य साहित्य लेखन की प्रवृत्तियों में भी अपनी लेखनी चलाई। फिर भी वह एक उपन्यासकार के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुए है उन्होंने बहुत-सी कहानियाँ भी लिखी है। जो किसी उपन्यास से कम रोचक नहीं लगती स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य को समृद्धि प्रदान करने वाले मोरवाल जी हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार और आलोचक भी है। इनकी रचनाएँ बिना किसी पन के सामान्य और अभिशप्त मानव समाज का पक्षधर बन जाती है। यह उनकी रचनाओं की पहचान है। यही उनकी शक्ति है।

उपन्यास:

काला पहाड़

काला पहाड़ उपन्यास मोरवाल जी ने 1999 में लिखा। उपन्यास का काम समकालीन यथार्थ के प्रतिनिधित्व के माध्यम से अतीत को पुनर्जीवित और भविष्य के मिजाज को रेखांकित करना है। कथाकार भगवानदास मोरवाल के उपन्यास की यह विशिष्टताएँ है कि काला पहाड़' के पात्रों की कर्मूमि 'मेवात क्षेत्र है। काला पहाड केवल उपन्यास की शीर्षक ही नहीं बल्कि मेवात की सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक है।

संस्कृति मूल रूप से किसी व्यक्ति या समाज की जीवन पद्धति ही है। जिसमें रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाज सब शामिल होते है। मेवात क्षेत्र में बसे मेव और हिन्दुओं का एक-दूसरे के प्रति स्नेह भाव को प्रस्तुत किया गया है।

बाबल तेरे देश में

'बाबल तेरे देश में (2004) मोरवाल जी का यह दूसरा उपन्यास है। मोरवाल जी के इस उपन्यास में एक स्त्री को अपने धर्म को लेकर जो समझ है। उसे दिखाने का प्रयास किया है तथा उपन्यास में जो परिवार है, जो समाज है । यो मेव समाज है और क्योंकि ये इस्लाम धर्म को मानने वाले है तो जाहिर सी बात है कि उनकी जो पूरी जीवन-पद्धति है। वो इस्लाम पर आधारित है।

उपन्यास के सारे नारी पात्र संघर्ष करते नजर आते है। उनका संघर्ष देश-दुनिया से नहीं, पर अपने ही परिवार के पुरुषों से है। स्त्री पात्र को महत्त्व दिया है तथा वह पुरुषों के साथ घर में संघर्ष करती नजर आजी है। उनका यही संघर्ष और हिम्मत उन्हें राजनीति और चुनाव तक ले जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में शकीला का पात्र ऐसा ही है। इस उपन्यास के बारे में खुद मोरवाल का कहना है कि "यह विमर्श नहीं है समृद्ध संसार की स्त्रियों की उस मुक्ति का, जो उन्हें कभी कहीं भी मिल सकती है, अपितु यह अपनी निजता और शुचिता बचाए रखने का लोमहर्षक उपाख्यान है। नारी जीवन की सामाजिक और मानसिक स्थितियों को प्रस्तुत करता. यह उपन्यास मानव मन के अंतर्मन तक पहुंचता है।

रेत

2009 में प्रकाशित उपन्यास रेत के भगवानदास मोरवाल जी एक जनजाति विशेष (कंजर) के द्वद्व और संघर्ष के साथ समकालीन भारतीय के कई अनकहे, अनसुलझे अंतविरोधों को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है इसमें नारी की स्थिति का वर्णन किया गया है तथा उपन्यास के शुरूआत में ही कमला बुआ अपनी पौती पिंकी जो अभी छः वर्ष

की ही है उसे पूछती है कि बेटी तुम्हें भाभी बनना है या बुआ ? पिंकी तुरन्त उत्तर देती है कि उसे बुआ बनना है। बुआ बनने का मतलब कि सजना-सँवरना और अपने इज्जतदारों का मन बहलाना और भाभी बनकर वह अपनी माँ की तरह इन सभी लोगों की नौकर नहीं बनना चाहती थी संतो की जिन्दगी जैसे इन सबकी सेवा करने के लिए हो। उसका पूरा दिन काम में ही बीत जाता था।

नरक मसीहा (2016)

नरक मसीहा उपन्यास भगवानदास मोरवाल जी ने 2016) में लिखा है। आधुनिक समाज के हाथियों की उपेशित उदासियों का अन्वेषण करने वाले भगवानदास मोरवाल ने इस उपन्यास में मुख्यधारा की खबर ली है। वह मुख्यधारा जो किस्म-किस्म की अमानवीय और असामाजिक गतिविधियों से उस ढांचे का निर्माण करती है। जिसे हम समाज के रूप में देखते जानते हैं।

हलाला

हलाला उपन्यास (2016) में लिखा गया इसमें मेवात के सीधे-सादे कस्बों-गाँवों के इलाकों में रहने वालों की कहानी है। भगवानदास मोरवाल ने उपन्यास के माध्यम से धर्म की आड में हो रहे स्त्री शोषण पर प्रकाश डाला है। हलाला गुस्से में लिए गए तलाक की कहानी है। दरअसल हलाला धर्म की आड़ में बनाया गया ऐसा कानून है जिसमें स्त्री को भोग्या बनाने का काम किया है। हलाला वह प्रथा है, जिसमें कोई तलाकशुदा महिला अपने पहले पति के पास दोबारा तब जा सकती है. जब उसका किसी दूसरे पुरुष से निकाह हो और वह पुरुष हमबिस्तर होने के बाद उसे तलाक दे। वैसे तो हलाला मर्दो को सजा देने के नाम पर बनाया गया कानून है। परन्तु इसमें स्त्री को भोगने की वस्तु बना दिया। सच तो यह है कि हलाला मर्द को तथाकथित सजा देने के नाम पर गढ़ा गया ऐसा पुरुषवादी षड्यंत्र है जिसका खामियाजा अंततः औरत को ही भुगतना पड़ता है।

सुर बंजारन

यह सुर बंजरन उपन्यास भगवानदास मोरवाल ने 2017 में लिखा था। हिन्दी के देशज और लोक-मानस की अनुकृतियों को उकेरने वाले कथाकार भगवानदास मोरवाल की औपन्यासिक कृति है। इसे हिन्दी का पहला उपन्यास कहा जा सकता है। जिसके आख्यान के केन्द्र में हाथरस शैली की नौटंकी, उसकी पूरी परम्परा और सुरों की समाप्त प्रायः दुनिया है।

कहानी

मोरवाल जी एक भावुक उपन्यासकार होने के साथ-साथ अच्छे कहानीकार भी है और हिन्दी साहित्य को समृद्धि प्रदान करने वाले कथाकार और आलोचक है। जब छठे दशक में नई कहानी' का जोर शोर था। नई कहानी के नाम पर नगरीय कहानियाँ लिखी जा रही थी। जिनमें स्त्री-पुरुष संबंधों को ही बार-बार उकेरा जाता था। कुंठा, संत्रास, हताश, सेक्स, अजनबी जैसे आयातित अनुभवों के सहारे कहानी रचना का ताना-बाना बुना जाता था उस समय कहानी को नया स्वरूप व नई दिशा प्रदान करने के लिए कुछ कथाकार आगे आये जिन्होंने गाँवों को अपनी

कलम से पकड़ा है। सिर्फ नर-नारी संबंध ही नहीं बल्कि मनुष्य की हर पीड़ा और उसके संघर्ष तथा समाज की समस्याओं को कहानियों में जकड़ने की कोशिश की।

मोरवाल जी की कहानियाँ, साहसिक प्रतिपाद के चलते मनुष्यता के पक्ष में खड़ी है। आज ऐसी ही कहानियों की जरूरत है। जिनमें स्थानीयता की जीवनी शक्ति और साथ में 'वैश्विक विजन भी। दस प्रतिनिधि कहानियों में भगवानदास मोरवाल की दुःस्वप्न की मौत, 'सीढ़ियाँ, माँ और उसका देवता आदि चर्चित कहानियों है। मोरवाल जी की कहानियों के कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है।

भगवानदास मोरवाल अब तक लगभग तीन दर्जन कहानियाँ लिख चुके है, जो तीन कहानी संग्रहों में प्रकाशित हो चुके है।

1. अस्सी मॉडल अर्फ सूबेदार (1994)

2. सीढियाँ, माँ और उसका देवता (2008)

3.लक्ष्मण रेखा (2010)

कविता

मोरवाल जी ने अपनी साहित्य सृजन यात्रा में कविता को भी महत्त्व दिया है वे अपनी यात्रा में कविता साहित्य की विभिन्न विधाओं का अनुभव समेटे अपने रास्ते की प्रत्येक कच्ची इंट को संघर्ष तथा संभावना की आँच में पकाने वाले कवि है। इन्होंने बचपन से ही कविता लिखना प्रारंभ कर दिया था। गाँव की मिट्टी से जुड़े मोरवाल जी बार-बार बताते है कि मनुष्य की यात्रा पराजय स्वीकार करने वाली नहीं है, वह अपराजेय है। उनकी कविता इस अर्थ में भी उल्लेखनीय है कि वे मामूली से मामूली आदकी के संघर्ष और सुख दुःख को उभारती है। मोरवाल जी की पहली रचना 'मेरा स्वप्न कविता है, जो इसी वर्ष गुड़गाँव से ही प्रकाशित साप्ताहिक सुपर एक्सप्रेस' (संपादक चन्द्रप्रकाश गुप्ता) के 25 नवम्बर, 1980 के अंक में प्रकाशित हुई। बाद में इनकी कविताएँ देनिक द्विप्युनः कादम्मिनी देैनिक हिन्दुस्तान जागृति, वीर-अर्जुन जैसी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ-साथ आकाशवाणी में भी प्रसारित हुई। अत. भगवानदास मोरवाल में अपनी रचनात्मक शुरुआत कविता से ही की थी उनकी एक मात्र कविता संग्रह है दोपहरी चुप है।

अन्य विधाएँ:

विभिन्न साहित्यिक और सामाजिक विषयों पर भगवानदास मोरवाल के 200 से अधिक लेख / आलोचनात्मक समीक्षाएँ देश की लब्ध प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है। इसके अलावा उनके काव्य संग्रह और निबंध संग्रह भी प्रकाशित हो चुके है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मोरवाल ने समय-समय पर मेवात की संस्कृति और लोक साहित्य को केन्द्र में रखकर अनेक लेख भी लिखे है। सामाजिक और साहित्यिक मुद्दों पर जनसत्ता के दैनिक कॉलम दुनिया मेरे आगे तथा विचार मण्डल में मेरे मन की गंगा कॉलम के तहत निरन्तर लेखन किया है। वर्तमान साहित्य में प्रकाशित मोरवाल जी का लेख 'वर्तमान विमर्श अन्तर्विरोध खासा चर्चित और विवादित रहा। प्रसिद्ध कथाकार

कमलेश्वर द्वारा निर्मित धारावाहिक परिक्रमा के अन्तर्गत मेवात पर बनाए गए एक एपिसोड में भगवानदास मोरवाल ने विशेष सहयोग प्रदान किया है।

अतः मोरवाल जी ने साहित्य की विविध कहानी संग्रह, उपन्यास, कविता, संग्रह और लेख तथा आलोचनात्मक समीक्षकों के द्वारा मेवात ही नहीं बल्कि हरियाणा राज्य की विश्वस्ता पर पहचान दिलाई है।

पुरस्कार एवम् सम्मान:

ब्रिटेन के सांसद और पूर्व आतरिक सुरक्षा राज्यमंत्री टोनी मैक्नल्टी ने ब्रिटिश संसद के हाउस ऑफ कामन्स में आयोजित एक गरिमामय समारोह में हिन्दी के सुपरिचित कथाकार भगवानदास मोरवाल को उनकी अनुपस्थिति में 15 वां अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान प्रदान किया। किसी कारणवश मोरवाल पुरस्कार लेने लदन नहीं जा सके। यह सम्मान मोरवाल के नवीनतम उपन्यास रेत के लिये दिया गया उनकी ओर से यह सम्मान उनके मित्र और दिल्ली के सांस्कृतिक पत्रकार अजित राय ने प्राप्त किया इस अवसर पर उन्होंने ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों के लिये स्थापित पक्षानंद सम्मान ब्रिटिश हिन्दी कवि मोहन राणा को उनके ताजा कविता संग्रह धूप के अंधेरे में के लिये प्रदान किया इस सम्मान का यह दसवां साल है।

उन्होंने हिंदी में अपना भाषण शुरू करते हुए कहा कि भाषाओं के माध्यम से हम सभ्यताओं के बीच संवाद स्थापित कर सकते है, भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि आपकी पहचान होती है।

पुरस्कार की अगर बात करें तो मेरा मानना है कि अगर उसकी चयन-प्रक्रिया पारदर्शी है तो ये लेखक के लिये संजीवनी का काम करता है। अब इस सम्मान की खबर जब अखबारों में छपी तो ऐसे-ऐसे मित्रों के फोन आये कि जिनसे मुलाकात हुये हमें बीस-बीस वर्ष हो गये और ये जो 2001 का पन्द्रहवाँ इन्दु शर्मा कथा सम्मान है। ये हमें बिल्कुल उचित समय पर मिला है। जब कि रेत की खूब चर्चा हो रही है, विवाद भी उठ रहे है और एक वर्ष होते-होते इसका दूसरा संस्करण भी आ चुका है। हमें ये इंदु शर्मा सम्मान ऐसे समय में मिला है जो आने वाले समय में हमें शिथिल नहीं होने देगा क्योंकि होता क्या है कि कभी-कभी आदमी को लगता है कि उसकी बहुत उपेक्षा हो रही है और ये बात उसमें एक अवसाद सा पैदा कर देती है, एक अकर्मण्यता आ जाती है कि आप अकारथ ही अपना जीवन इसमें दे रहे है अचानक जब ऐसे सम्मान आपको मिलते है। तो आपको लगता है कि नहीं लेखक ही सर्वोपरि है। लेखक की बजाय अगर किसी रचना को सम्मान दिया जाता है तो ये उसके लिये सबसे बड़ी उपलब्धि है।

मोरवाल जी के सम्मान / पुरस्कार इस प्रकार है

1. पत्रकारिता के लिए शोभना अवार्ड (1984)

2.पत्रकारिता के लिए प्रभादत्त मेमोरियल अवार्ड (1985)

3. डॉ० अम्बेडकर सम्मान, भारतीय दलित साहित्य अकादमी (1985)

4. राजा जी सम्मान, पूर्व राष्ट्रपति श्री वेकटरमण द्वारा मद्रास का (1995)

5.साहित्यिक कृत्ति सम्मान, हिन्दी अकादमी नयी दिल्ली (1994)

6. साहित्यिक कृत्ति सम्मान, हिन्दी अकादमी दिल्ली (1994)

7. साहित्यकार सम्मान, हिन्दी अकादमी दिल्ली (2004)

8. कथाक्रम सम्मान, लखनऊ (2006)

9. शब्द साधक ज्यूरी सम्मान (2009)

10. अन्तर्राष्ट्रीय इन्दुशर्मा कथा सम्मान कथा (चूके), लन्दन (2009)

11.जनकवि मेहरसिंह सम्मान, हरियाणा साहित्य अकादमी (2010)

12. श्रवण सहाय अवार्ड (2012)

सदस्य

पूर्व सदस्य हिंदी अकादमी दिल्ली सरकार एवं हरियाणा अकादमी

जनवरी 2008 में ट्यूरिटन (इटली) में आयोजित भारतीय लेखक सम्मेलन में शिरकत

सम्मेलन में शिरकत

हिंदी की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, 1987

इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ, 1988

निष्कर्ष:

अतः कहा जा सकता है कि भगवानदास मोरवाल जी ने एक बेहतरीन उपन्यास लिखा है। गीत संगीत की एक लुप्त हो चुकी परम्परा नौटकी की गायिका के बहाने हाथरस शैली की नौटकी का एक तरह से उन्होंने इतिहास दर्ज कर दिया है। हाथरस शैली की प्रसिद्ध कलाकार कृष्णा कुमारी के जीवन को आधार बनाकर लिखे गए इस उपन्यास में बहुत बारीकी से इस कला की ऊँचाइयों और इसके पतन को दर्ज किया गया है। भगवानदास मोरवाल के व्यक्तित्व की विलक्षणता इन्हीं जीवन सूत्रों और गतियों की सहज परिणति है। नगीना के सभी दोस्तो में मोरवाल जी ज्यादा गम्भीर थे, वाचाल थे, समझदार थे, सामाजिक थे ऐंटी सोशल थे. अन्तर्मुखी थे. बहिर्मुखी थे और क्या-क्या नहीं थे मोरवाल जी की शख्सियत की सबसे बड़ी खुबसूरती यह है कि ये ईर्ष्या और स्पद्द्धा जैसी गौण प्रतियोगिताओं से स्वयं को अलग रखते हुए सहजता के साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहे है अपने सफर का रास्ता खुद बनाते हैं। प्रतिभा, सहजता और विविध गुणों से युक्त मोरवाल जी के व्यक्तित्व को हम एक प्रेरणा और प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में देखते हैं। ये उभर रहे लेखकों में रचनारत रहने की प्रेरणा ही नही देते वरन उन्हें सार्थक सृजन की सही सारणी का संकेत भी देते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1.लोकेश कुमार गुप्ता, लोकमन का सिरजनहार भगवानदास मोरवाल, प्रस्तावना में से वही, पृ० 95
2.लोकेश कुमार गुप्ता, लोकमन का सिरजनहार भगवानदास मोरवाल, पृ० 95
3.भगवानदास मोरवाल, पकी जेठ का गुलमोहर पृ० 96
4. भगवानदास मोरवाल, पकी जेठ का गुलमोहर, पु० 163
5.भगवानदास मोरवाल, काला पहाड, पृ० 314-15
6.लोकेश कुमार गुप्ता, लोकमन का सिरजनहार भगवानदास मोरवाल, प्रस्तावना में से